P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-I, August-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के कृषि संम्बन्धी विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

उतसव आनन्द
सहायक प्राध्यापक
अर्थशास्त्र विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय
विश्वविद्यालय, सागर

अभिलाषा साहू
शोधार्थी
अर्थशास्त्र विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय
विश्वविद्यालय, सागर

सारांश

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश की अर्थव्यवस्था में कुल रोजगार में कृषि क्षेत्र का लगभग 59 प्रतिशत योगदान बना हुआ है। परन्तु देश की प्रमुख समस्या **जोतो के छोटे आकार** की है, जो कृषि उत्पादकता को सर्वाधिक प्रभावित करती है। डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि, भारत में समान उपविभाजन नियम के कारण कृषि जोतें निरंतर छोटी होती जा रही हैं। इन जोतों के घटते आकार को उन्होंने भारतीय कृषि के लिए अत्यधिक हानिकारक बताया है। इस समस्या का समाधान के लिए अनेक उपाय बताए जैसे चकबंदी, औद्योगीकरण,पूँजी और पूँजीगत वस्तुओं को बढ़ाना। पर कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए सबसे अच्छा उपचार **औद्योगीकरण** है।

मुख्य शब्दः उत्पादन फलन,उपखण्डन , जनसंख्या, आर्थिक जोत, अनार्थिक जोत, उपविभाजन, चकबंदी, औद्योगीकरण, उत्पादकता

प्रस्तावना

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 दिन मगंलवार को मऊ मध्यप्रदेश में हुआ था।1990 को भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार **भारत रत्न** से सम्मानित(मरणोपरांत) किया गया। अम्बेडकर जी ने सन् 1918 में अपने लेख **स्माल होल्डिंग्स इन इण्डिया एण्ड देयर रेमेडीज** में कृषि भूमि सुधार के सम्बध मे अपना विचारदिया।

विश्व की सर्वाधिक जनंसख्या कृषि पर ही जीवनयापन करती है। कृषि विश्व का सबसे पुराना व्यवसायएवं वर्तमान में सबसे बड़ा उद्योग हैं। आर्थिक विचारों के इतिहास में सर्वप्रथम 18वीं शताब्दी में फ्रांस के प्रकृतिवादियों ने कृषि को महत्व प्रदान किया। उन्होंने कृषि को उत्पादन का सर्वश्रेष्ठ एवं विशुद्ध साधन माना। इस अवधारणा को अर्थशास्त्र के जनक एड्म स्मिथ ने अपनी पुस्तक An Enquiry into the nature and causes of Wealth of Nations (1776)में भी स्वीकार किया था। प्रो. माल्थस ने अपने **जनसंख्या के सिद्धांत** में कृषि को विशेष महत्व देते हुए स्पष्ट किया, कि कृषि उत्पादन **अंकगणतीय क्रम** जबकि जनसंख्या पर **ज्यामितीय क्रम** में वृद्धि होती है।

तालिका क्र.–1 भारत की जनसंख्या

जनसंख्या वर्ष	जनसंख्या (करोड़ में)
1951	36.11
1961	43.92
1971	54.82
1981	68.33
1991	84.64
2001	102.87
2011	121.01

Source- Government of India,Census of India-2011.

तालिका क्र.–1 से स्पष्ट है कि वर्ष 1951 से 2011 तक भारत की जनसंख्या में दशकीय वृद्धि में धनात्मक वृद्धि हुई है।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र के उद्देश्य निम्नलिखित है –

1. प्रस्तुत शोधपत्र में कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के समाधान के लिए डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों का विश्लेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।
2. भारत में कृषि जोतों की स्थिति का अध्ययन करना।
3. भारत में कृषि जोत के समक्ष आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-I, August-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र में भारत में कृषि आर्थिक जोतों की स्थिति, इसकी समस्याओं एवं समाधान पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत शोधपत्र में द्वितीयक समंको का प्रयोग किया गया है जो उपलब्ध सम्बद्ध प्रकाशित आलेखों, पुस्तकों से संकलित किए गये है, जिसके कारण निष्कर्ष की पूर्ण विश्वसनीयता द्वितीयक समंको पर आधारित है। प्रस्तुत शोधपत्र में वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार, ''प्राथमिक उद्योग का संबंध पृथ्वी, मिट्टी या जल में से उपयोगी पदार्थो के निकालने से है। यह शिकार, मछली पालन, पशुपालन, लकड़ी का कार्य और खनन का रूप ले सकता है। जो कि द्वितीयक क्षेत्र (उद्योगों) के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराता है।'' इसलिए किसी भी देश में प्राथमिक उद्योगों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान होता है। कृषि का संबंध खाद्यानों के उत्पादन से होने के कारण इसका स्थान सबसे ऊपर है।

भारत देश में जहां कृषि पर निर्भरता अत्यधिक होनें के कारण इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। किन्तु इसके समक्ष कई समस्यायें हैं। जैसे–क्या उत्पादन किया जाए? उत्पत्ति के साधनों का अनुपात क्या हो? जोत का आकार क्या हो? भूधारण की पद्धति क्या हो? आदि। इन सबसे प्रमुख समस्या **जोतो के आकार** की है, जो कृषि उत्पादकता को सबसे अधिक प्रभावित करती है। डॉ. अम्बेडकर ने माना था कि भारत में उपखण्डन के कारण जोतें निरंतर छोटी होती जा रही हैं।

उनका मानना था कि उपखण्डन भूमि को टुकड़ों में बांटता है जिससे–

- श्रम शक्ति का अपव्यय होता है।
- कृषि भूमि मेड़ और सीमांकन में बर्बादी होती है।
- फसलों की निगरानी, कुएं खोदना और श्रम की बचत करने वाले उपकरणों का उपयोग अव्यवहारिक हो जाता है।
- सड़के, नहरें बनाना कठिन हो जाता है तथा इससे उत्पादन लागत बढ़ जाती है।

उन्होंने इन जोतों के घटते आकार को भारतीय कृषि के लिए अत्यधिक हानिकारक बताया है।

तालिका क्र.–2 भारत में कृषि जोत

क्र.	कृषि जोत के प्रकार	जोतो का आकार(हेक्टेयरमें)	भारत में (प्रतिशत)	आर्थिक/ अनार्थिक जोत
1	सीमान्त जोत	0-1.0	64.8	अनार्थिक
2	छोटे	1.0-2.0	18.5	आर्थिक
3	अर्ध–मध्यम	2.0-4.0	10.9	आर्थिक
4	मध्यम	4.0-10.0	4.5	आर्थिक
5	बड़े	10.0 या अधिक	0.8	आर्थिक

तालिका क्र. 3

भारत में कृषि जोतो की कुल संख्या(1000 में)

क्र.	कृषि जोत के प्रकार	1990–91	1995–96	2000–01	2005–06	2010–11
1	सीमान्त जोत	63389	71179	75408	83694	92826
2	छोटे	20092	21643	22695	23930	24779
3	अर्ध–मध्यम	13923	14261	14021	14127	13896
4	मध्यम	7580	7092	6577	6375	5875
5	बड़े	1654	1404	1230	1096	973
	योग	106637	115580	119931	129222	138348

Source- Agriculture Census 2010-11

तालिका क्र.–4

भारत में कृषि जोतो का कुल आकार(1000 हेक्टेयर में)

क्र.	कृषि जोत के प्रकार	1990–91	1995–96	2000–01	2005–06	2010–11
1	सीमान्त जोत	24894	28121	29814	32026	35908
2	छोटे	28827	30722	32139	33101	35244
3	अर्ध–मध्यम	38375	38953	38193	37898	37705
4	मध्यम	44752	41398	38217	36583	33828
5	बड़े	28659	24160	21072	18715	16907
	योग	165507	163355	159436	158323	159592

Source- Agriculture Census 2010-11

तालिका क्र.–5

भारत में कृषि जोतोद्वारा औसत उत्पादन(1000 हेक्टेयर में)

क्र.	कृषि जोत के प्रकार	1990–91	1995–96	2000–01	2005–06	2010–11
1	सीमान्त जोत	0.39	0.40	0.40	0.38	0.39
2	छोटे	1.43	1.42	1.42	1.38	1.42
3	अर्ध–मध्यम	2.76	2.73	2.72	2.68	2.71
4	मध्यम	5.90	5.84	5.81	5.74	5.76
5	बड़े	17.33	17.20	17.12	17.08	17.38

Source- Agriculture Census 2010-11

आंकड़ों के आधार पर स्पष्ट है कि भारत भले ही एक कृषि प्रधान देश हो लेकिन इसकी कृषि उत्पादकता कम है। कृषि उत्पादकता में वृद्धि जोतों की चकबंदी और आकार में वृद्धि करके की जा सकती है। परन्तु डॉ. अम्बेडकर के अनुसार जोतों की चकबंदी में दो समस्याएँ है–

1. छोटी और बिखरी हुई जोतो को एक कैसे किया जाऐ?

2. एक बार जोतो की चकबंदी कर दी जाए तो उसी आकार में उन्हें कैसे बनाए रखा जाए?

उनके अनुसार चकबंदी के दौ रूप ऐच्छिक विनिमय,धारण अधिकारहै **ऐच्छिक विनिमय** से बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त करने की आशा नहीं की जा सकती। केवल **धारण अधिकार** को प्रतिबंधित करने से ही कुछ अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते है।

ऐच्छिक विनिमय में प्रत्येक जोत का मूल्य ज्ञात कर लिया जाता है तथा खेतों की मूल सीमाएं समाप्त कर दी जाती है। सड़कों, सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए भी भूमि अलग निर्धारित कर दी जाती है। फिर शेष भूमि को नए तरीके से बांटा जाता है। जिसमें प्रत्येक भाग ऐसे आकार का होता है जो खेती, मिट्टी आदि की स्थानीय दशाओं के अनुसार एक आर्थिक इकाई बन सके। **जबकि** धारण अधिकार में खातेदारों और उनकी जोतो की सूची बनाई जाती है और गांवो के वरिष्ठ लोगों द्वारा इन जोतो का बाजार कीमत पर मूल्यांकन किया जाता है। फिर भूमि का पुनर्वितरण किया जाता है और कृषकों को उनकी मूल जोत के अनुपात में नई भूमि दी जाती है, जिसका मूल्य वही होता है। यदि अंतर हो, तो उसका नकद भुगतान कर समायोजन किया जाता है। इस रीति में किसी भी खातेदार को भूमि से वंचित नहीं किया जाता। छोटे खेतों वाले किसानों को भी उनकी भूमि का पूरा मूल्य मिलता है।

अतः जोतों का आकार आर्थिक जोत के बराबर होना चाहिए। डॉ. अम्बेडकर ने आर्थिक जोत की व्याख्या की और बताया कि, **आर्थिक जोत एक ऐसी जोत होती है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को पर्याप्त उत्पादन के अवसर उपलब्ध हों ताकि वह आवश्यक व्ययों के बाद अपने परिवार का उचित पालन पोषण कर सके।**

दूसरी ओर अम्बेडकर का मानना था कि, उत्पत्ति के साधनों के संयोगों का नियमन, अनुपात के नियम के अनुसार होता है। किसी फर्म में उत्पत्ति के साधनों का गलत अनुपात लाभदायक की जगह हानिकारकहो सकता है।अतः साधनों की परस्पर–निर्भरता को ध्यान में रखते यदि कोई व्यक्ति एक साधन को परिवर्तित करता है तो उसी अनुपात में अन्य साधनों की मात्रा को भी परिवर्तित करे। ताकि इस प्रकार के संयोगों से विभिन्न साधनों के बीच एक आदर्श अनुपात विद्यमान हो जाय। उत्पादन फलन से संबंधित इन विचारों को आर्थिक जोत पर लागू करते हुए अम्बेडकर का यह भी कहना था कि, ''यदि हम कृषि को आर्थिक उपक्रम मानते है तो फिर यह भी निश्चित है कि बड़ी या छोटी जोत जैसी कोई बात नहीं है। आर्थिक उपक्रम के रूप में उत्पत्ति के अन्य साधनों की मात्रा ही यह निर्धारित कर सकती है कि उसकी जोत बहुत बड़ी है या बहुत छोटी '' वास्तव में भूमि की एक इकाई के साथ उत्पत्ति के अन्य साधनों का सही या गलत अनुपात भूमि की जोतो को आर्थिक या अनार्थिक बना सकता है। इस प्रकार एक छोटा खेत उसी प्रकार आर्थिक हो सकता है जैसे एक बड़ा खेत। आर्थिक या अनार्थिक होना भूमि के आकार पर नहीं वरन् भूमि के साथ–साथ अन्य साधनों के बीच निर्धारित अनुपात पर निर्भर करता है।यह अनुकूलतम अनुपात प्रति इकाई अधिकतम उत्पादन करते हैं।

यदि किसान के पास उपलब्ध उपकरणों की मात्रा में परिवर्तन होता है तो उसे अपने खेत के आकार के साथ उनका समायोजन करना होगा। किसी समय विशेष पर उसका निर्णय छोटे आकार की जोत के पक्ष में होगा तो कभी बड़े आकार की जोत के पक्ष में। डॉ. अम्बेडकर का कहना था कि, वर्तमान जोतों के आकार में वृद्धि करना तभी संभव है, जब यह सिद्ध हो जाये कि खेतों का आकार छोटा है और कृषि उत्पाद मांगों में वृद्धि हो गई है।

भारत में कृषि समस्याओं का समाधान केवल जोतों का आकार बढ़ा कर नहीं किया जा सकता। इसके लिए पूँजी और पूँजीगत वस्तुओं को बढ़ाना आवश्यक है। परन्तु पूँजी का निर्माण बचत पर निर्भर करता है और बचत केवल वहीं हो सकती है जहाँ आधिक्य हो। भारतीय कृषि में कोई आधिक्य नहीं है। इस घाटे को आधिक्य में परिवर्तित करने की आवश्यकता है।

डॉ. अम्बेडकर ने कृषि बीमारियों के बारे में भी चर्चा की। उनका मानना था कि किसानों के पास इतनी बचतनही है जिससे कि वे दवाओं का छिड़काव कर सके। इसे केवल जोतो की चकबन्दी और आकार में वृद्धि करके, उत्पादकता बढ़ाकर प्राप्त किया जा सकता है।

अतः वर्तमान **सामाजिक–आर्थिक–परिस्थितियों** में चकबंदी और जोतों के आकार में वृद्धि का सबसे अच्छा उपचार**भारत का औद्योगीकरण** है। उन्होंने औद्योगीकरण के महत्व और लाभों की व्याख्या करते हुए लिखा था, कि इसके प्रभाव संचयी प्रकृति के होते हैं जैसे–

- भूमि पर दबाव कम होता है।
- पूँजी की मात्रा में वृद्धि होती है।
- पूँजीगत वस्तुएँ अनिवार्य रूप से जोतों के आकार में वृद्धि को जन्म देती है।
- उपविभाजन के अवसर कम हो जाते हैं।
- औद्योगीकरण का प्रतिवर्ती प्रभाव होता है जिससे रोजगार तेजी से बढ़ता है।

भीमराव अम्बेडकर के अनुसार औद्योगीकरण के कारण चकबंदी नहीं होगी परन्तु इससे चकबंदी सुविधाजनक हो जायेगी। डॉ. अम्बेडकर ने अगस्त 1936 में स्थापित 'इंडिपेन्डेन्ट लेबर पार्टी' के कार्यक्रमों में कहा कि **'खेतिहरों की गरीबी का कारण जोतों का विभाजन और उन पर जनसंख्या का दबाव है'** इसके समाधान हेतु पुराने उद्योगों का पुनर्स्थापन और नये उद्योगों की स्थापना आवश्यक है।अतः इसका उपचार निःसंदेह **औद्योगीकरण** है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधपत्र के समग्र तथ्यों के विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्ष को निम्न बिंदुओं मे अभिव्यक्त किया जा सकता है–

1. डॉ. अम्बेडकर के अनुसार भारत में उपखण्डन एवं अपखण्डन के कारण जोतें निरंतर छोटी होती जा रही हैं। उपविभाजन से भूमि को टुकड़ों में बांटने से श्रम शक्ति का अपव्यय होता है।

2. भारत में 1990–91 से 2010–11 तक कृषि जोतों की संख्या में वृद्धि हुई है। 1990–91 में कृषि जोतों की संख्या 106637 हजार थी जो कि 2010–11 में बढ़कर 138348 हजार हो गई।
3. भारत में 1990–91 से 2010–11 तक कृषि जोत के आकार में कमी आई है। 1990–91 में कृषि जोत का आकार 165507 हजार हेक्टेयर थी जो कि 2010–11 में घटकर 159592 हजार हेक्टेयर हो गई।
4. उत्पत्ति के साधनों का सही या गलत अनुपात भूमि की जोतो को आर्थिक या अनार्थिक बनाता है। इस प्रकार एक छोटा खेत उसी प्रकार आर्थिक हो सकता है जैसे एक बड़ा खेत।
5. भारत भले ही एक कृषि प्रधान देश हो लेकिन इसकी कृषि उत्पादकता कम है। जिसको जोतों की चकबंदी और आकार में वृद्धि द्वारा बढ़ाया जा सकता है।
6. भारत में आर्थिक जोतो की तुलना में अनार्थिक जोतो का प्रतिशत अधिक है। यदि कृषि छोटे और बिखरे हुए खेतों से पीड़ित है तो उसका उपचार निःसंदेह औद्योगीकरण है।

सन्दर्भ

1. बाबा साहेब, डॉ. अम्बेडकर संपूर्ण वाङ्मय, खण्ड–2, डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1998।
2. नागर, विष्णुदत्त एवं कृष्ण वल्लभ, डॉ. अम्बेडकर के आर्थिक विचार और नीतियां, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1995।
3. डावेन पोर्ट, एच.जे., द इकोनोमिक्स ऑफ इंटर प्राइज, न्यूयार्क, मेकमिलन, 1913।
4. बाबा साहेब आम्बेडकर, राईटिग्स एण्ड स्पीचेज, वाल्यूम 1, शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रकाशित, 1979।
5. खिमेशरा, ज्ञानचन्द, डॉ. अम्बेडकर का आर्थिक चिन्तन, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1995।
6. गोयल, अनुपम, भारतीय आर्थिक समस्यायें एवं नीतियाँ, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, खजूरी बाजार, इन्दौर, 1989।
7. अग्रवाल, अनुपम, अर्थशास्त्र प्रतियोगिता साहित्य, साहित्य भवन प्रकाशन, हॉस्पिटल रोड, आगरा, 2006 ।
8. बड़ौदा कमेटी रिपोर्ट 1881।
9. स्मिथ,एडम, वेल्थ ऑफ नेशन्स, बुक 3, अध्याय 11
10. डॉ. रामरतन शर्मा, विकास का अर्थशास्त्र एवं नियोजन, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2005।
11. सी. एम. चौधरी, भारत में आर्थिक पर्यावरण, मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर,2006।
12. अनुपम अग्रवाल, अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2006।
13. भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2011।
14. एस.के. मिश्र, वी.के. पुरी, भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई,1998।
15. रूद्र दत्त, के.पी. एम. सुन्दरम, भारतीय अर्थव्यवस्था'' एस.चन्द एण्ड कम्पनी लि. रामनगर, नई दिल्ली 1984।